

Q. No. वाणिज्यिक बैंक के कार्य तथा साख सृजन (Credit Creation) की प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन करें।

आधुनिक अर्थव्यवस्था में वाणिज्यिक बैंक (Commercial Bank) सबसे महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं में से एक हैं। किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में इनका अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। वाणिज्यिक बैंक जनता से धनराशि को जमा (Deposit) के रूप में स्वीकार करते हैं तथा उस धन को ऋण (Loan) के रूप में व्यक्तियों, व्यापारियों, किसानों, उद्योगों एवं अन्य संस्थाओं को उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार बैंक बचत (Savings) को निवेश (Investment) में परिवर्तित करते हैं, जिससे उत्पादन, रोजगार, आय तथा राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा मिलता है।

वाणिज्यिक बैंक केवल जमा स्वीकार करने और ऋण देने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे भुगतान प्रणाली को सरल बनाते हैं, विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं, निवेश संबंधी सेवाएँ प्रदान करते हैं, डिजिटल बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं तथा साख सृजन (Credit Creation) के माध्यम से अर्थव्यवस्था में मुद्रा की उपलब्धता बढ़ाते हैं। इसी कारण इन्हें आधुनिक आर्थिक व्यवस्था की "रीढ़ (Backbone of the Economy)" कहा जाता है।

वाणिज्यिक बैंक के कार्य (Functions of Commercial Banks)

वाणिज्यिक बैंकों के कार्यों को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है—

प्राथमिक कार्य (Primary Functions)

गौण कार्य (Secondary Functions)

आधुनिक एवं विकासात्मक कार्य (Modern and Development Functions)

I. प्राथमिक कार्य (Primary Functions)

1. जमा स्वीकार करना (Accepting Deposits)

जमा स्वीकार करना वाणिज्यिक बैंक का सबसे प्रमुख कार्य है। बैंक जनता की बचत को सुरक्षित रखता है तथा उस पर ब्याज प्रदान करता है। जमा स्वीकार करने से बैंक के पास बड़ी मात्रा में पूँजी एकत्रित होती है, जिसका उपयोग ऋण देने में किया जाता है।

(i) बचत खाता (Savings Account)

सामान्य नागरिकों के लिए।

बचत की आदत को प्रोत्साहित करता है।

जमा राशि पर ब्याज मिलता है।

सीमित निकासी की सुविधा होती है।

(ii) चालू खाता (Current Account)

व्यापारियों और कंपनियों के लिए।

असीमित लेन-देन की सुविधा।

सामान्यतः ब्याज नहीं मिलता।

ओवरड्राफ्ट की सुविधा उपलब्ध होती है।

(iii) सावधि जमा (Fixed Deposit)

निश्चित अवधि के लिए धन जमा किया जाता है।

सबसे अधिक ब्याज मिलता है।

अवधि पूरी होने पर मूलधन एवं ब्याज प्राप्त होता है।

(iv) आवर्ती जमा (Recurring Deposit)

प्रत्येक माह निश्चित राशि जमा की जाती है।

छोटे निवेशकों के लिए उपयुक्त।

निश्चित अवधि के बाद ब्याज सहित राशि प्राप्त होती है।

2. ऋण एवं अग्रिम प्रदान करना (Granting Loans and Advances)

बैंक जमा राशि का एक भाग नकद आरक्षित रखकर शेष धन को ऋण के रूप में देता है।

ऋण के प्रमुख प्रकार-

- व्यक्तिगत ऋण (Personal Loan)
- गृह ऋण (Home Loan)
- शिक्षा ऋण (Education Loan)
- कृषि ऋण (Agricultural Loan)
- वाहन ऋण (Vehicle Loan)
- व्यापारिक ऋण (Business Loan)
- औद्योगिक ऋण (Industrial Loan)
- नकद साख (Cash Credit)
- अधिविकर्ष (Overdraft)
- बिलों का विनिमय (Discounting of Bills)

बैंक इन ऋणों पर ब्याज लेकर अपनी आय अर्जित करता है।

II. गौण कार्य (Secondary Functions)

(A) एजेंसी संबंधी कार्य (Agency Functions)

बैंक अपने ग्राहकों के प्रतिनिधि (Agent) के रूप में कार्य करता है।

इसके प्रमुख कार्य हैं-

- चेक एवं बिलों का संग्रह।
- लाभांश एवं ब्याज की वसूली।
- बीमा प्रीमियम का भुगतान।
- बिजली, पानी, गैस एवं टेलीफोन बिलों का भुगतान।
- आयकर एवं अन्य करों का भुगतान।
- धन का स्थानांतरण।

- प्रतिभूतियों की खरीद एवं बिक्री।
- पेंशन एवं वेतन का भुगतान।

(B) सामान्य उपयोगिता कार्य (General Utility Functions)

वाणिज्यिक बैंक जनता को अनेक उपयोगी सेवाएँ प्रदान करते हैं-

- लॉकर सुविधा।
- बैंक ड्राफ्ट जारी करना।
- बैंक गारंटी देना।
- विदेशी मुद्रा का विनिमय।
- डेबिट कार्ड एवं क्रेडिट कार्ड जारी करना।
- एटीएम सुविधा।
- इंटरनेट बैंकिंग।
- मोबाइल बैंकिंग।
- डिमैट खाता।
- म्यूचुअल फंड एवं बीमा सेवाएँ।

III. आधुनिक एवं विकासात्मक कार्य (Modern and Development Functions)

वर्तमान समय में वाणिज्यिक बैंक अनेक आधुनिक सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं-

- UPI भुगतान
- QR Code भुगतान
- NEFT, RTGS एवं IMPS
- डिजिटल वॉलेट
- नेट बैंकिंग
- मोबाइल बैंकिंग
- ऑनलाइन ऋण सुविधा
- ई-कॉमर्स भुगतान
- विदेशी व्यापार को वित्तीय सहायता
- स्टार्टअप एवं MSME को ऋण

साख सृजन (Credit Creation)

अर्थ (Meaning)

साख सृजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वाणिज्यिक बैंक अपनी जमा राशि के आधार पर उससे कई गुना अधिक ऋण प्रदान करते हैं। बैंक कुल जमा राशि का केवल एक भाग नकद आरक्षित रखते हैं तथा शेष राशि को ऋण के रूप में देकर नई साख का निर्माण करते हैं। यही प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है, जिससे बैंकिंग प्रणाली में कुल ऋण की मात्रा कई गुना बढ़ जाती है।

साख सृजन की प्रक्रिया (Process of Credit Creation)

मान लीजिए किसी व्यक्ति ने बैंक में ₹10,000 जमा किए तथा CRR = 20% है।

प्रथम चरण

जमा = ₹10,000

आरक्षित = ₹2,000

ऋण = ₹8,000

द्वितीय चरण

जमा = ₹8,000

आरक्षित = ₹1,600

ऋण = ₹6,400

तृतीय चरण

जमा = ₹6,400

आरक्षित = ₹1,280

ऋण = ₹5,120

चतुर्थ चरण

जमा = ₹5,120

आरक्षित = ₹1,024

ऋण = ₹4,096

पंचम चरण

जमा = ₹4,096

आरक्षित = ₹819

ऋण = ₹3,277

इसी प्रकार यह प्रक्रिया आगे भी चलती रहती है और प्रारंभिक ₹10,000 के आधार पर बैंकिंग प्रणाली में कई गुना साख का निर्माण हो जाता है।

सारणी

चरण

जमा राशि (₹)

आरक्षित (20%)

दिया गया ऋण (₹)

प्रथम

10,000

2,000

8,000

द्वितीय

8,000

1,600

6,400

तृतीय

6,400

1,280

5,120

चतुर्थ

5,120

1,024

4,096

पंचम

4,096

819

3,277

साख सृजन की आवश्यक शर्तें

- जनता का बैंकिंग प्रणाली पर विश्वास होना चाहिए।
- नकद आरक्षित अनुपात (CRR) कम होना चाहिए।
- ऋण की पर्याप्त माँग होनी चाहिए।
- आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिरता होनी चाहिए।
- बैंकिंग प्रणाली विकसित होनी चाहिए।
- जनता नकद रखने के बजाय बैंक में जमा करना पसंद करे।
- केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति अनुकूल हो।
- साख सृजन के लाभ
- व्यापार एवं उद्योग का विस्तार।
- निवेश में वृद्धि।
- रोजगार के नए अवसर।
- राष्ट्रीय आय में वृद्धि।
- उत्पादन में वृद्धि।

- आर्थिक विकास को गति।
- बचत का उत्पादक उपयोग।
- मुद्रा के प्रवाह में वृद्धि।
- छोटे एवं मध्यम उद्योगों का विकास।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन।
- साख सृजन की सीमाएँ
- RBI का नियंत्रण।
- CRR एवं SLR की बाध्यता।
- ऋण की कम माँग।
- जनता की नकद रखने की प्रवृत्ति।
- आर्थिक मंदी।
- बैंकिंग प्रणाली में विश्वास की कमी।
- मुद्रास्फीति की संभावना।
- ऋण न चुकाने (NPA) की समस्या।
- वाणिज्यिक बैंकों का आर्थिक विकास में योगदान
- बचत को प्रोत्साहित करना।
- पूँजी निर्माण में सहायता।
- कृषि एवं उद्योग को वित्त उपलब्ध कराना।
- विदेशी व्यापार को बढ़ावा देना।
- उद्यमिता का विकास।
- रोजगार के अवसर उत्पन्न करना।
- डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना।
- सरकार की वित्तीय योजनाओं के क्रियान्वयन में सहायता करना।
- संतुलित क्षेत्रीय विकास में योगदान देना।

निष्कर्ष

वाणिज्यिक बैंक आधुनिक अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं। वे केवल जमा स्वीकार करने और ऋण प्रदान करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि बचत को निवेश में परिवर्तित कर आर्थिक विकास की गति को तेज करते हैं। साख सृजन उनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसके माध्यम से अर्थव्यवस्था में धन एवं ऋण की उपलब्धता बढ़ती है। इससे व्यापार, उद्योग, कृषि, रोजगार और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। केंद्रीय बैंक के नियंत्रण में कार्य करते हुए वाणिज्यिक बैंक देश की वित्तीय स्थिरता बनाए रखते हैं और समावेशी आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।